बुँदेलखण्ड का इतिहास

दूसरा भाग

लेखक - दीवान प्रतिपाल सिंह

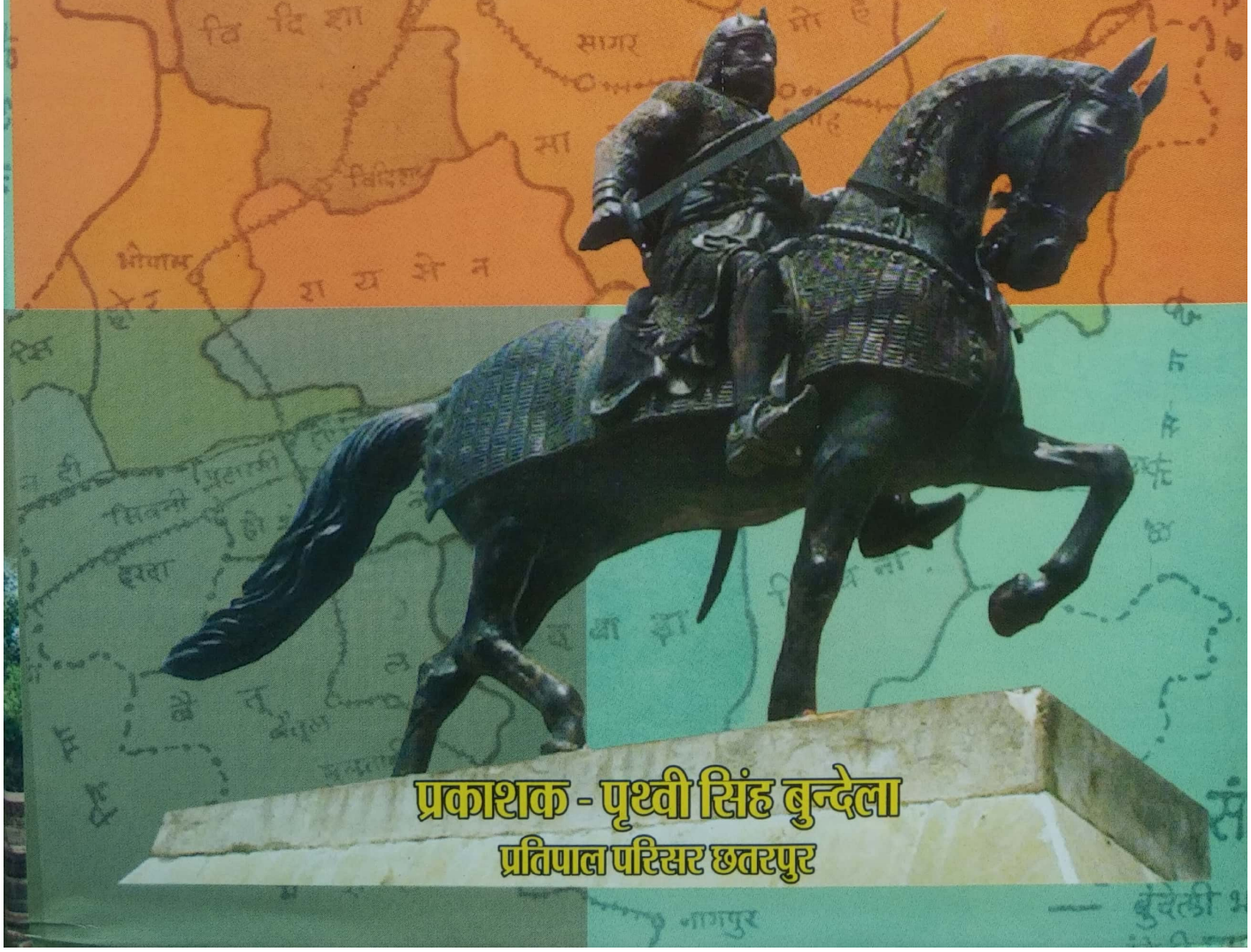

प्रकाशक - पृथ्वी सिंह बुन्देला
प्रतिपाल परिसर छतरपुर

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक परिचय

पृथ्वी सिंह बुन्देला

जन्म - ५ जनवरी १९२६ ई.
जन्म स्थान - छतरपुर
पिता - दीवान प्रतिपाल सिंह जू देव
माता - श्रीमती सीता जू
शिक्षा - बी.ए., होम्योपैथिक डिप्लोमा
सम्मान - म.प्र. शासन से उत्कृष्ट शिक्षण कार्य के लिए सम्मानित शिक्षक, शास. शिक्षा महाविद्यालय छतरपुर, पुरस्कृत चित्रकार, सम्मानित समाजसेवी।

पता - दीवान प्रतिपाल परिसर
पहरा हाउस, सागर रोड, छतरपुर (म.प्र.)
फोन - 07682-243574
मो. 9926182801

सम्पादक परिचय

डॉ. बहादुर सिंह परमार

जन्म - १६ जुलाई १९६३,
जन्म स्थान - रानीपुरा, (छतरपुर)
शिक्षा - एम.ए., पी-एच.डी.
रचनाएं - 1. अमरकांत का कथा साहित्य
2. बुन्देलखण्ड की छन्दबद्ध काव्य परंपरा
सम्पादन - 1. पत्रिका बुन्देली बसंत
2. बुन्देलखण्ड की साहित्यिक धरोहर
3. छतरपुर जिले की लोक कथाएं
4. बुन्देली व्यंजन आदि
सम्प्रति - शास. महाराजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय छतरपुर में सहा. प्राध्यापक हिन्दी

संपर्क - एमआईजी -7, न्यू हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी
छतरपुर (म.प्र.) मो. 9425474662

Scanned with OKEN Scanner

©कुँ. पृथ्वी सिंह बुन्देला

प्रथम प्रकाशन : सन् 2009

संख्या : 500 प्रतियाँ

कीमत : 300 रुपये

मुद्रक : जिला सहकारी संघ मुद्रणालय मर्या0
छतरपुर (म.प्र.)

प्राप्ति स्थल : डॉ. हरिसिंह घोष
घोषयाना मुहल्ला, संकट मोचन मार्ग
छतरपुर (म.प्र.) मोबा. 9425142066

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

(अ) खंड - आर्य

- अध्याय प्रथम - भूमिका १
- अध्याय द्वितीय - साहित्य ८
- अध्याय तृतीय - समय १५
- अध्याय चतुर्थ - मन्वन्तर काल या सृष्टिकाल २५
- अध्याय पंचम - सातवाँ वैवस्वत मनु तथा मन्वन्तर २६
- अध्याय षष्ठ - पीढ़ियाँ और समय ३८
- अध्याय सप्तम् - आर्यों का मुख्य कुल और धर्म ४५
- अध्याय अष्टम् - अवतार तथा महाप्रलय आदि घटनाएँ ५६
- अध्याय नवम् - आर्यों का प्राचीन आरंभिक इतिहास ६६
- अध्याय दशम् - आर्यों की प्राचीन वंशावली ८८
- अध्याय एकादश - बुन्देलखण्ड में आर्य चिन्ह आदि ९३

(आ) खंड - सूर्य वंश

- अध्याय प्रथम - मारीचि, कश्यप, सूर्यकुल ९६
- अध्याय द्वितीय - सूर्य वंश १०९
- अध्याय तृतीय - निमि वंश १३४
- अध्याय चतुर्थ - सूर्यवंश के शाखा कुल १३६
- अध्याय पंचम - सूर्य वंशावली १४१
- अध्याय षष्ठ - बुन्देलखण्ड में सूर्यवंशी १४९

(इ) खंड - चंद्र वंश

- अध्याय प्रथम - इतिहास १५२
- अध्याय द्वितीय - शाखाएँ १६७
- अध्याय तृतीय - महाभारत और कृष्णावतार १७४
- अध्याय चतुर्थ - आधुनिक बातें १८१

Scanned with OKEN Scanner

- अध्याय पंचम - बुन्देलखण्ड में चिन्ह १८३
- अध्याय षष्ठ - चंद्रवंशावली १९०

(इ) खंड - प्रद्योत, विश्रवा आदि के वंश

- अध्याय प्रथम - प्रद्योत वंश २०५
- अध्याय द्वितीय - विश्रवा वंश २०७
- अध्याय तृतीय - महाराज वंश २०८
- अध्याय चतुर्थ - धुंधसेन वंश २०९
- अध्याय पंचम - अन्य वंश २१०

(ए) खंड - ऐतिहासिक काल ईसा से पूर्व

- अध्याय प्रथम - शिशु नाग वंश २१५
- अध्याय द्वितीय - शाक्य, गौतम बुद्ध सिद्धार्थ और बौद्ध धर्म २२२
- अध्याय तृतीय - महावीर तथा जैन धर्म २२८
- अध्याय चतुर्थ - लिच्छवि तथा ठाकुरी वंश २३४
- अध्याय पंचम् - चेदि, वत्स, पांचाल,अवन्ती, मगध २३७
- अध्याय षष्ठ - नन्द वंश २३८
- अध्याय सप्तम् - मौर्य वंश २४१
- अध्याय अष्टम् - शुंग वंश २४८
- अध्याय नवम् - कण्व वंश २५२
- अध्याय दशम् - आंध्र वंश २५३
- अध्याय एकादश - विदेशी २५८

❄❄❄❄❄

Scanned with OKEN Scanner

लेखक परिचय

दीवान प्रतिपाल सिंह

पिता - महाराज कुमार दीवान भानु सिंह जू देव
जन्म - पौष कृष्ण ८ बुध, संवत् १९३८ विक्रमी
अवसान - जनवरी १९३७ ई.
जन्म स्थान - ग्राम पहरा, छतरपुर राज्य
शिक्षा - सन् १९०१ ई. में आगरा से मैट्रिकुलेशन
रचनाएं - 1. आर्य देव कुल का इतिहास
2. बुन्देलखण्ड का इतिहास (बारह भागों में)
3. वीर बाला (उपन्यास)
4. खेल शतक
5. खेल पच्चीसी
संपादन - श्रृंगार कुंडली, विदुर, प्रजागर - कृष्णकवि,
छत्रप्रकाश -लाल कवि, होली हजारा

प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक दीवान प्रतिपाल सिंह जी ने बुंदेलखण्ड का विशालकाय इतिहास लिखकर अपने देश की सच्ची सेवा की है। यह इतिहास ही उनका यथार्थ जीवन है। दीवान जी जैसे कर्मठ तथा स्वदेश प्रेमी पुरूष के लिए पुण्यमय कार्य करना सर्वथा योग्य ही हुआ है। बुन्देलखण्ड के इतिहास का अभाव हमें बहुत दिनों से खटक रहा था। अवसर पाकर उस अभाव की पूर्ति एक अपने ही प्रिय शिष्य द्वारा हुई यह हमारे लिए गौरव को बढ़ाता है।

■ **लाला भगवानदीन 'दीन'**

दीवान प्रतिपाल सिंह लिखित बुन्देलखण्ड का इतिहास सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। दुर्भाग्य से अस्सी वर्ष बीतने के बाद भी इसका अब तक प्रथम भाग ही प्रकाशित है। शेष अप्रकाशित हैं। सुखद यह है कि इतने वर्ष बीतने के बाद भी उनके सुपुत्र कुँवर श्री पृथ्वी सिंह उन सभी भागों को सुरक्षित रखे हुए हैं .... जिस दिन सभी खंड प्रकाशित हो जाएंगे यह साहित्य और इतिहास जगत में ऐतिहासिक उपलब्धि होगी।

■ **डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंयाँ**

Scanned with OKEN Scanner

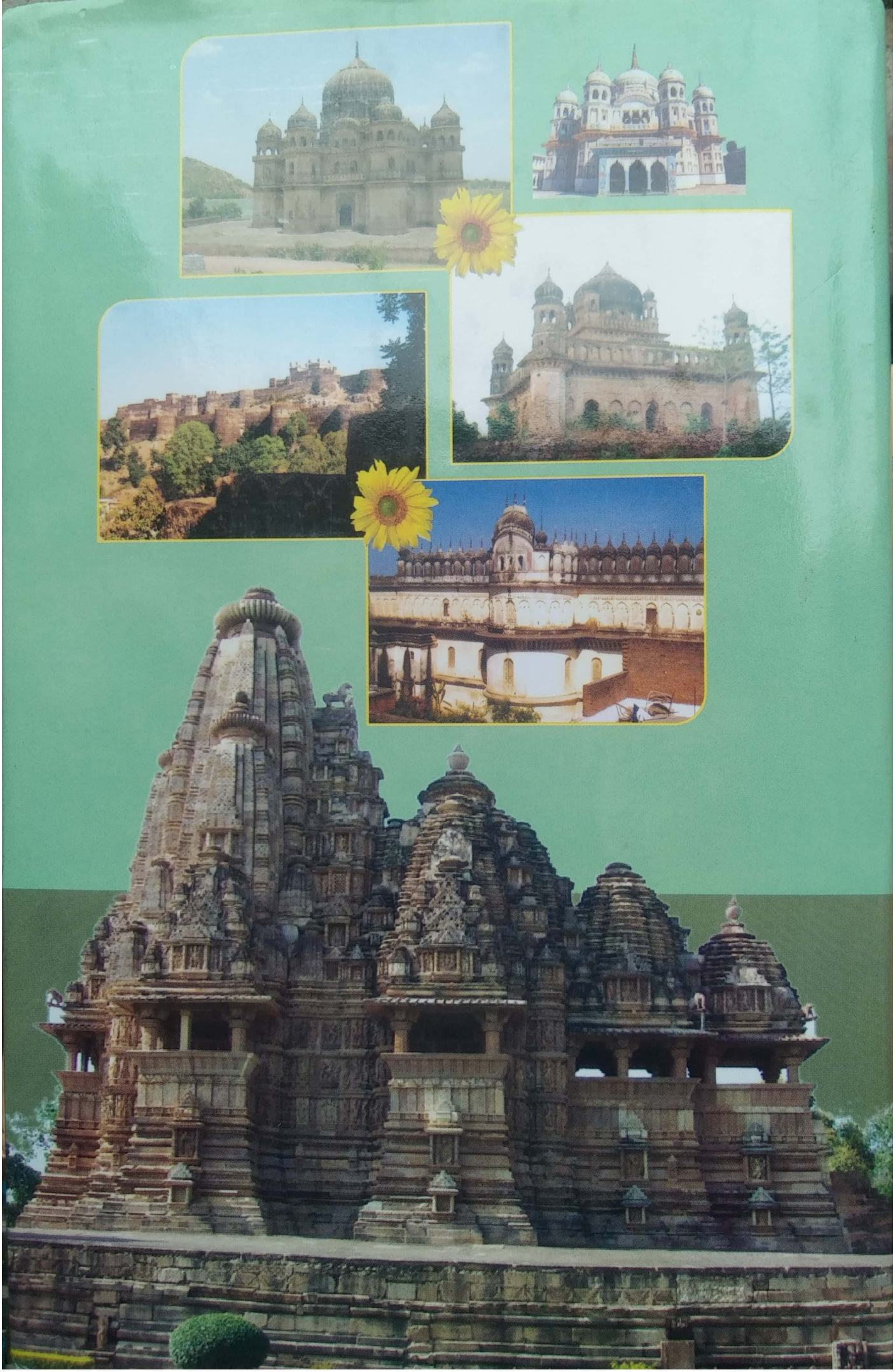

Scanned with OKEN Scanner